Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, JULY-AUG 2017, VOL- 4/35

भाषा संस्कृत के वर्ण विन्यास में हाई–स्कूल स्तर के छात्रों की उपलब्धियों पर क्षेत्र एवं लिंग के प्रभाव का अध्ययन

माधुरी सिंह, Ph. D.
एसोसिएट प्रोफेसर (शिक्षा), के०आर०जी० पी०जी० कालेज, मथुरा

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भावों, अनुभवों, विचारों की अभिव्यक्ति के माध्यम को भाषा कहते हैं। भाषा 'भाष' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है व्यक्त वाणी आनन्द वर्धन ने स्पष्ट किया है कि ध्वनि के लिखित व्यक्त रूप को वर्ण कहा गया है। इन वर्णों से लिपि एवं विशिष्ट भाषा की उत्पत्ति हुई। ऋगवेद में वाणी को देवों से उत्पन्न माना गया है।

मनुस्मृति के अनुसार – **अनाधि निधना नित्या वागुस्त्टष्ठा स्वयं भूवा।**

भाषा मानवता, मानव सभ्यता, सामाजिकता, राजनीतिक, आर्थिक विकास की प्रमुख कड़ी के रूप में मानी जाती है। जिस देश, व्यक्ति, समाज की भाषा जितनी ही समृद्ध, प्रमाणिक एवं सरल होती है उसका विकास उसी गति से होता है। वर्तमान में विज्ञान और तकनीकी का विकास जिस द्रुत गति से हो रहा है, पर्यावरण एवं मानवीय मूल्यों, संस्कृति का ह्रास न्यूटन के गति के तीसरे नियम (**Action Against Reaction**) के अनुसार ही हो रहा है, जिससे प्रकृति एवं पर्यावरण के साथ–साथ समाज, देश की अखण्डता भी खण्ड–खण्ड हो रही है, जिसे पुनः विकास की धारा में लाने हेतु नई शिक्षा नीति 2019–20, 21 में जोर शोर से प्रयास चल रहा है। नई शिक्षा नीति में भाषा, मूल भाषा के विकास, प्रचार–प्रसार पर विशेष बल दिया जा रहा है। क्योंकि भाषाओं की जननी अर्थात मूल भाषा संस्कृत रही है। संस्कृत ही भारतीयता, संस्कृति आदि वेद, पुराण, मंत्र, श्लोक जिसे देव भाषा का दर्जा प्राप्त है, संस्कृत भाषा है।

वहीं भाषा की आधारशिला वर्ण विन्यास का सीधा तारतम्य अक्षर ज्ञान से होता है। संस्कृत भाषा के शुद्ध लेखन, उच्चारण आदि एवं प्रयोग में इसकी आवश्यकता है। संस्कृत शब्दों के बनावट में अक्षर ज्ञान (वर्ण), सर्ग, विसर्ग, रूप, धातु रूप, समास, संधि आदि के अनुरूप कार्यान्वयन करना होता है। वर्ण विन्यास, छात्र के जीवन में संस्कृत भाषा के पूर्ण उपलब्धि में अहं भूमिका अदा करता है। यह उसके सम्पूर्ण शिक्षा विकास का अंग होता है। वर्ण विन्यास विकासात्मक योग्यता है और विभिन्न भाषा कौशलों को प्रभावित करती है। छात्र के व्यक्तित्व को सुधारने में इसकी बड़ी भूमिका है। यह स्कूल के पाठ्यक्रमों, शैक्षणिक कार्यक्रमों, सहगामी क्रियाकलापों पर आधारित होता है। मेनन के एक अध्ययन से

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पता चलता है कि छठी श्रेणी के अध्यापक को शब्दों के भेद का अभ्यास कराने से शब्द के भेद का ज्ञान और वर्ण विन्यास दोनों में महत्वपूर्ण लाभ हुआ है, को देखते हुए हाई स्कूल स्तर पर भाषा संस्कृत के विकास हेतु छात्रों के वर्ण विन्यास में उनके द्वारा उपलब्धि को ज्ञात कर उनकी कमजोरियों एवं कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है।

शैक्षिक मूल्यांकन एक व्यापक सम्प्रत्यय है। इसके द्वारा छात्रों की बुद्धि, अभिक्षमता, रुचि आदि मानसिक गुणों एवं शैक्षिक उपलब्धियों आदि का मापन एवं मापन परिणामों की व्याख्या की जाती है। जिसके आधार पर भविष्य कथन सुझाव, निर्देश या उद्देश्य निर्मित किये जाते हैं।

इन मापन के लिए परीक्षण की आवश्यकता पड़ती है। परीक्षणों हेतु उन परीक्षणों की व्यापकता एवं वैज्ञानिकता, पारदर्शिता के आधार पर सुनिश्चित की जाती है। उसमें मानकी कृत उपलब्धि परीक्षण जिसकी कठिनाई स्तर, विभेदकता, विश्वसनीयता, वैद्यता एवं मानक निश्चित होते हैं या ज्ञात किये जाते हैं। उन्हीं के मापनों द्वारा मूल्यांकन की जा सकती है।

हाईस्कूल स्तर के छात्रों पर भाषा संस्कृत के वर्णविन्यास अवयव उपलब्धि के मापन हेतु मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण, जिसकी विभेदकता, विश्वसनीयता, वैद्यता एवं मानक रूप से ज्ञात किया गया।

अध्ययन का प्रारूप : उपरोक्त उद्देश्यों एवं मानवीकृत उपलब्धि परीक्षण हेतु सर्वेक्षण विधि को अपनाते हुए वस्तुनिष्ठ परीक्षण में हाईस्कूल के पाठ्यक्रमानुसार सर्ग, उपसर्ग, धातु, रूप, लकार, काल, समास, तत्सम, सन्धि, सन्धि विच्छेद आदि को ध्यान में रखते हुए प्रश्नों को उनके भारात्मक संख्यानुसार अन्तिम रूप देते हुए 55 प्रश्न निर्मित किये गये, जिनमें से आंशिक अध्ययन के बाद पाँच प्रश्नों को निरस्त करते हुए 50 प्रश्नों को व्यवस्थित रूप देते हुए प्रथम परीक्षण हेतु 400 प्रतियों में छपवाया गया।

परीक्षण के विश्लेषणात्मक पद विश्लेषण हेतु नेतृत्वपरक न्यायादर्श हेतु स्तरीकृत यादृच्छिक न्यायदर्श हेतु शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से 370 छात्र एवं छात्राओं को 16 विद्यालयों से चुना गया। जिनको परीक्षण के निर्देशित, निर्देशानुसार, प्रशासित कर फलांकन कर क्रमानुसार व्यवस्थित किया गया।

फ्रीमैन, गैरेट, इवेल के अनुसार परीक्षण की प्रभावकता व उपयोगिता उसके पदों की विशेषता पर निर्भर करती है। जिसे ज्ञात करने के लिए 27 प्रतिशत उच्च एवं 27 प्रतिशत निम्न अंकों वाले परीक्षण पदों को लेकर प्रत्येक प्रश्नानुसार पद विश्लेषण कर उसकी कठिनता एवं विभेदकता की गणना की गयी तथा 0.30 से कम एवं 0.90 से उच्च कठिनता तथा कम विभेदकता वाले प्रश्नों को निरस्त करने के उपरान्त मात्र 44 प्रश्न शेष बचे। जिसे पुनः व्यवस्थित कर अन्तिम परीक्षण हेतु 500 प्रतियों में छपवाया गया।

पद विश्लेषण के उपरान्त अन्तिम परीक्षण के प्राप्तांकों को वर्गीकृत करते हुए परीक्षण की विश्वसनीयता हेतु अर्द्ध विच्छेद विधि से सम एवं विषम पदों के प्राप्तांकों के बीच प्रोडेक्ट मोमेन्ट विधि से

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

स्पीयर मैन फार्मेसी सूत्र के आधार पर विश्वसनीयता गुणांक ज्ञात किया जो 0.96 पाया गया। परीक्षण की विषयवस्तु एवं पाठ्यवस्तु वैधता विशेषज्ञों के अनुसार शत प्रतिशत रहा।

अन्तिम जाँच के उपरान्त मानकों के निर्धारण हेतु 1000 छात्रों पर प्रशासित एवं फलांकित कर पुनः परीक्षण की प्रशासन विधि, प्रतिदर्श, उत्तर कुंजी तैयार कर निर्देश, समय सीमा, फलांकन आदि महत्वपूर्ण तथ्यों को अन्तिम रूप देते हुए 5 से 99 तक के प्रतिशतांक, '5' के अंतराल पर ज्ञात किया गया। जिसे तालिका सं०–1 में स्पष्ट किया गया है।

तालिका सं०–1

परीक्षण की शतांकीय मानक

प्रतिशतांक	**5**	**10**	**15**	**20**	**25**	**30**	**35**	**40**	**45**	**50**
गणना द्वारा	10.51	13.94	14.99	16.36	17.74	19.11	20.4	21.67	22.93	25.19
प्राप्तांक	11	14	15	17	18	19	20	22	23	25
प्रतिशतांक	**55**	**60**	**65**	**70**	**75**	**80**	**85**	**90**	**95**	**100**
गणना द्वारा	25.26	26.27	27.28	28.29	29.28	31.01	32.93	34.92	37.63	41.16
प्राप्तांक	25	26	27	28	29	31	33	35	38	41

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि 60 प्रतिशत छात्र 26 से कम अंक प्राप्त कर सके। जबकि 99 प्रतिशत छात्र 41 तक ही अंक प्राप्त कर सके हैं।

छात्रों के उपलब्धियों पर लिंग एवं छोत्र के प्रभाव को जानने एवं प्रमाणित करने हेतु मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता हेतु क्रान्तिक अनुपात (C.R.) की गणना की गयी है, जिसे तालिका सं०–2 एवं 3 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

तालिका सं०–2

ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के औसत उपलब्धि में अन्तर की सार्थकता

क्षेत्र	**छात्रों की संख्या**	**मध्यमान**	**प्र० वि०**	**मध्यमान की प्रमा० त्रुटि**	**विचलन की प्रमा० त्रुटि**	**आलोचनात्मक अनुपात**	**सार्थकता**
ग्रामीण	55	22.57	6.81	0.426	0.627	8.10	0.01
शहरी	45	27.65	7.22	0.461			

प्राप्त उपलब्धियों को साँख्यिकी नियमानुसार मध्यमान, मध्याक्रमान, प्रमाणिकत विचलन मध्यमान की प्रभाविक त्रुटि, विचलन की त्रुटि, आलोचनात्मक अनुपात (**C.R.**) एवं उसकी सार्थकता क्षेत्र एवं लिंगानुसार ज्ञात किया गया।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के मध्यमानों के अन्तर का आलोचनात्मक अनुपात 0.01 स्तर पर सार्थक है। अर्थात शहरी छात्रों की औसत उपलब्धि

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(27.65) एवं ग्रामीण छात्रों की मध्यमान उपलब्धि (22.75) है, जो कि ग्रामीण छात्रों की तुलना में वास्तव में उच्च है। जो यह सिद्ध करती है कि विकसित समाज की भाषा भी विकसित होती है। अर्थात ग्रामीण क्षेत्रों में भाषा के पिछड़ेपन का कारण वर्ण विन्यास है।

इसी प्रकार बालक एवं बालिकाओं के मध्य अन्तर की सार्थकता की गणना को तालिका सं०–3 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

तालिका सं०–3

बालक एवं बालिकाओं की वर्ष विन्यास में उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता

क्षेत्र	छात्रों की संख्या	मध्यमान	प्र० वि०	मध्यमान की प्रमा० त्रुटि	विचलन की प्रमा० त्रुटि	आलोचनात्मक अनुपात	सार्थकता
बालक	54	24.04	7.69	0.482	0.682	2.72	0.01
बालिकायें	46	25.95	7.59	0.484			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बालक एवं बालिकाओं के वर्ण विन्यास में उपलब्धि के मध्यमानों में अन्तर 0.01 स्तर पर आलोचनात्मक अनुपात की गणना के उपरान्त सार्थक रहा। जिसका कारण बालिकाओं में मानसिक एकाग्रता एवं वर्ण विन्यास की शुद्धता का होना है।

परिणाम स्वरूप सिद्ध होता है कि शहरी छात्र, ग्रामीण छात्रों से तथा बालिकायें, बालकों से वर्ण विन्यास की उपलब्धि में स्पष्टतः बेहतर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

गैरेट ई० हेनरी, शिक्षा एवं मनोविज्ञान में साँख्यिकी, कल्याणी पब्लिकेशन, 1977.

सिंह, आर०डी० एवं सिंह माधुरी, हाई स्कूल स्तर पर हिन्दी में उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं मानवीकरण, नई शिक्षा, जयपुर, 1989.

सिंह माधुरी, 'गढ़वाल मण्डल के जूनियर तथा हाई स्कूल के विद्यार्थियों के संस्कृत लेखन की त्रुटियों का विश्लेषण एवं समाधान। पीएच०डी० शोध ग्रन्थ, डॉ० रा०म०लो० अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद, 1995.

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies